

ASHA ARCHIVES 3621

१ कालवकुम्भाप्रामुखादि ॥

२ कालवकुम्भाप्रामुखादि ॥

२



ASHA ARCHIVES 3621

গুণসিদ্ধি



ॐ नमः श्री कालवक्राय ॥ सर्वकृतिविमलमुखा मयेकमाना अवैद्य न स्यान्न सयुक्तम  
याविरुद्धम् ॥ मूर्खयिया जनयना रिजनं गिनानां न स्मिन् नमः ॥ स हजया गतिमुद्धमान्ये ॥ य  
द्यमग्रागुर्नो नाथं जनानां युगवृद्धये ॥ लिखाम्यहं यथा स्मर्यं कालवक्राच्च न कर्म ॥ नगदीना  
वनश्रीमत्यनमादिवृद्धं ननु नाजाकारि लिखाम ॥ यान्नूत्वा यमयीया ॥ यमावावमनकि  
या ॥ यकृत्य मूलमुद्धृत् ननु कासादिवृद्धये ॥ जलस्नानं नमः ॥ त्वं वरुं यथायथं  
॥ यी न वरुं गृहल्लस्या मावाय्यस्य वज्रिने ॥ सककात्रमयवार्कं दवंगानाधनयिन दिनि  
॥ नमो भक्तु स्नानं कुर्यात् ॥ नथाव ॥ जलस्नानं न वदादी मनु स्नानं न गार वदि नि ॥ नमो  
लयनिगुद्धि कुर्यात् ॥ नथाव ॥ स्नानमायत्रासं सक्तुं उंकारं नान्नूयिष्यं ॥ ० नस्नानं क

[illegible]



ध्यामनावायविभु उरु नातिमूख ४ व द लभा सादिकं कृ यो न । न धावल दूकात्रव  
 कुतनु नातिनकाया विमलव रया उं अ ४ दं द ४ दं क ४ ॥ यरु या या त्मक काये वा कि  
 रु रुना प्रियन म म काय वा कि रु रुना न व जे व जा म न रु रु वी क नू र रु रु ध धा लाय न  
 नादिक नि ४ स्वर व स्वादा ॥ ४० नी दं म म मू वा य उ ४ धा य वि वं का न य वि न न व ज व द  
 म सु लं वा द न क ला व र्ण धा यान म रु न न रु ना धा य मा न ल य द न त्वा कं या व ल्प न न न  
 स रु यो क वृ क व र्ण ल य म रु नि वा ना न । त न ४ धा क व य ना त्मानं धा यान ॥ धा नी द ह्यो  
 व नि ॥ त न ध न व उं स्वर व रु द्वा सर्व ध म्मी ४ स्वर व रु द्वा दं म मि ल्प चार्य न ना ल ला ट उं  
 गु क म मि ता शं क ४ अ ४ न क व ल स रु व द द य र्ण क रु म मा य सि दि न ना री द ४ वी न

<sup>म</sup>  
 वे ना व नं उ ४ धा व र्ण धा म का य ४ यु क न ४ नी लं व ज स ल न य म दि नि । त न ध न न उं द ४ सर्वा  
 मु ना ज मा न कृ ग न क न व ज नी कृ द ४ व रु द म म क न सि धा ध य स्वा दा । अ न न म रु द  
 य न स्य नं क न द क न म र्द य दि नि ॥ त धा अ वा ना दि ल का ना क ४ य व द म स्वे ना ४ ॥ अ ४  
 ४ ३ ४ अ य ४ अ न ड अ ल रु य न व ल ॥ नि वा म क ला कु लि सर्व स धि य रु वा ४ क नि  
 धा म ल य वी दि य ॥ द न द न ल व रु द्वा रु द्वा द न य क ना धा ध रु नी य य व या व म ।  
 ला वा ना या दा अ ल ड अ न उ क ॥ ५ ४ अ ४ अ ४ ॥ नि य धि या दि क म धा न ना द रु  
 सं य ट रं का र ना ले व र्ण व रु द क या म धा धा ला न न रु च ड क ना रु द ४ य व ४  
 क व ज मू द म ध य दि नि । त धा । न धा ली वा द न ल वा द रु ला न र य य न मा त्मानं सं य







कचिर्ल कनर्ग प्रह्लासलदा ह्य नानमाया नमिना य उ व न ह न क ल्वा म न म लु लं ॥ ह व  
 निक न क व ह ४ सर्व नो ग वि मू क ४ म न म नू न वि गि ह्नु च द वे द्वा कि का नि ४ ध न के न क  
 समु द्वा मा य न नो ग वं ह ॥ सु ग न व न गृ ह स्मि को य क म्मो नि क ल्वा ल नू सं सा ग थ द यं य  
 म ॥ न त ४ उ व ज ल ख ह ॥ ०० नि म न न न ल क न ॥ ०० त म ल म थ य म्म द ल्वा ॥ उं ऊ  
 ४ ह्वा ह नि क लं य काल्वा ॥ उं म ल ख सर्व न थ ग मा अ धि ह्नु ह्वा ह नि ल खान म धि  
 नि ह्नु ॥ न त य न ज का ग म लो द न व लि वा द्वा दि म लु ल न नु ह्नु य य नि य टि न उं  
 का व नि य त्रं शि यू द मा ध न म लु ल सा ध न य द सं गृ हा क के ल क ध सा स न स हि न म व  
 ला क य नान न स व द य यं का न य नि ध न न का ह्नु द ल क म ल क ह्नु का य नि ऊं का न य नि

२ धर्म भागो लि ना वृद्ध

न त व नु म लु ल ग न ह्नु का न य नि ध न नी ल क लि ॥ ०० नि म काला जाला क ल मा न व लाना  
 क लि न स क ल दि म लु ल म व ला क म न सा र ग व न मा वा ह य न ॥ न थ न य न मा दि क ह्नु  
 व जारु ह्नु रा वि न ४ सर्व न्थ य गु ॥ ०० य क चि ल ना वा ह य ल न ४ ह्नु न न म्मि म य सर्व स्तं ध  
 म्म ला दि ल क ह्नु ॥ नानो व ह्नु म य ल्को न स लि न म लु ल न य ॥ आ का श म न सा थ्वा लो सं व ह्नु  
 म लु ला ल्म क मि नि ॥ न मा ल ला ट क ह्नु द य ना रि ह्नु न य क म ह्नु ॥ ऊं ऊ ४ ऊं ऊ ४ ऊं नि नो उं  
 ऊं ४ ह्नु ४ ४ ४ नि नि य त्र ध र्म ग र्ध ध र्म ग गु चि का म गि क ल्वा क नो य वा चि ल् ह्नु न स  
 नू या चि ला व व ज मा ला दि का ४ ह्नु ल य न ॥ न थ वा व ज मा ला द या न का ४ ह्नु न य ल य या  
 द या न वा व ज ला ग्मा दि का ४ ह्नु न म ला चि का म ॥ ह्नु द्वा म्म ल्वा द्वा द्वा ४ न का ४ ह्नु न य ह्नु



[illegible][illegible]



क्रिकयावधं॥युग्यवृद्धेविहास्यामिमद्यंसा नसकमेधुनां॥ब्रह्मसार्धवदुर्दल्य॥४॥वृष्ट  
 मायांविमुक्ति॥॥नागद्वययेमादवमानमिष्यीयेसत्तवी॥विषवद्वर्जयिष्यामि  
 स्वयनावाटदुर्क॥सर्वीकगलकस्मीदिनकत्रिष्यामिसर्वदा॥दानयययदास्यामि  
 पूर्यहानरुलोकय॥चतुर्वक्रविहानावविदत्रिष्यामिनामिष॥चतुर्विमानसंगुह  
 कत्रिष्याविलेसकन॥संवृद्धवाधिसत्तानां कत्रिष्यामिनद्यांक्रिया॥नाकसपुनउका  
 नांवरुयिष्यामिसामिषी॥समयावाधिसत्तानां कत्रिष्यामिदिनयुमि॥नकत्रिष्यादा  
 यानांकाक्षनांवलिराकृष्ण॥वाधिवर्ध्यां कत्रिष्यामिबृद्धीवविगायनादुक्क  
 दवदल्यानांमहाविस्मयकात्रिणी॥दशयानमिनावालोयुवयित्वाजिनोत्रसशर

३ ग x

विष्यामिनावृद्धावर्मवजंयुवर्लका॥वाधिविलेसमूल्याद्यवउरिहृविस्त्रिग  
 हासत्तानिमकुयिष्यामिबृद्धतामृगहृकय॥॥मिजुदियागं॥॥ममावतमा  
 नरुन॥प्रतिधनमिदंरुलोस्वक्यादिकुस्वस्त्रि॥संवृद्धास्वधरुणाकस्यादवन  
 मात्ररुदिमि॥मनश्चयथमविलेयुजांयुक्थीमि॥मथावविलेयुजांयुनाकृत्यकायय  
 जांमनाममामिति॥मनश्चयुजाथमनंकयुमि॥मथाव॥प्राविमुलपुलायी॥मनश्च  
 महुलमथागमास्युनिवाधमसांस्त्राविनानांजिनानांयुजाथमनंकयुमि॥मथाव  
 सहुलमथागमास्युनिवाधमसांस्त्राविनानांजिनानांयुजाथमनंकयुमि॥मथाव  
 सहुलमथागमास्युनिवाधमसांस्त्राविनानांजिनानांयुजाथमनंकयुमि॥मथाव  
 सहुलमथागमास्युनिवाधमसांस्त्राविनानांजिनानांयुजाथमनंकयुमि॥मथाव

३











वक्त्रलक्षणाहारानां विद्वत्कैयंकसंमूहकवल्लोकध्वजवर्हिस्त्रयगिरिः  
त्रिवयुत्रस्त्रितयुवविदहादिदिग्मतकृष्णगृहमिदिव्यवस्त्रयादीयगृहयाः प्रतितितियत  
त्राद्वर्हिगमगुलवक्त्रमध्यस्त्रितस्य प्रतितितियतयुवादिदृक्कादिविरुवकादिलकलः  
स्यरुगवतासावता॥ समयपूजायानुपूजकजनाहिलावादिदवसकलकम्मसमाश्रयः  
नविरुवकास्यवपाध्वानागृह्णदीपादिदवताः पूर्वोदिष्युजयता॥ ॐ अंः कृष्णदीपाः  
येनमशापूर्व॥ ॐ अंः नकादीपायेनमः॥ दकिन॥ ॐ अंः ध्वजदीपायेनमः॥ यश्चिमा ॐ  
आःपीतदीपायेनमः॥ डरुवा॥ नृगिगृहिकमनदिक्का ॐ हाः यदीपायनमः॥ वायुवा  
ॐ हंः सधागायेनमः॥ नृभत॥ ॐ हंः मनीविकायेनमः॥ नशय॥ ॐ हंः धूमायेनमः॥

मूरना॥ नृगिसंदायक्रमतविदिक्का॥ ततश्चतुष्कानदवीपृष्ठेषु॥ ॐ हं विक्तामनेयतम  
॥ मूरना॥ ॐ अंः धर्मगुरुनेनमः॥ नशय॥ ॐ ॐ धर्मनंखायेनमः॥ नृभत॥ ॐ हाः  
कल्पवृक्षायेनमः॥ वायुव॥ विरुवाक्कायहनरदततगायगवताववस्त्रनयनः॥  
ॐ वृद्धायनमः॥ ॐ धर्मायनमः॥ ॐ संधायनमः॥ ॐ स्वाहाविकायनमः॥ ॐ धर्म  
कायनमः॥ ॐ संशगकायनमः॥ ॐ निम्मानिकायनमः॥ ॐ हूनवकायनमः॥  
ॐ विरुवकायनमः॥ ॐ वाक्कायनमः॥ ॐ कायवकायनमः॥ ॐ चतुर्विमाकस्थान  
मः॥ ॐ चतुर्वक्त्रविहानस्थानमः॥ ॐ नयविहवाधियाकि कधर्मस्थानमः॥ ॐ चतु  
वर्णातिगतसहस्रधर्मस्थानमः॥ ॐ सर्वधर्मदणकस्थानमः॥ ॐ चतुर्वयाय



[illegible][illegible]



ॐ ह्रीं लिख्यं वा ॥ तगादक्रिणदा ल वा म ॥ ॐ अ व ज या ध य न मः ॥ त गः यू वा दि दान द क्रि  
न दा ल वा म ॥ ॐ न र य ग प्र यि न मः ॥ ॐ अ न क्रि ति ग र्हा य न मः ॥ ॐ डाला के श्व वा य न मः ॥  
ॐ अ ल स र्व ति वि ष षा वि क र्ति न न मः ॥ त गः यू व दान वा म ॥ ॐ अ स म न र डाय  
न मः ॥ त गः ॐ ड र न दान वा म ॥ ॐ आः न द व जा य न मः ॥ त गा वा य वा दि का ल वा म ॥  
ॐ आ ल ग न्ध व जा य न मः ॥ ॐ डी नू प व जा य न मः ॥ ॐ आ न व स व जा य न मः ॥ ॐ नूः  
स्य न व जा य न मः ॥ त गा र य नू दान वा म ॥ ॐ आः ध म्म ध उ व जा य न मः ॥ त तः यू वा दि  
दान म ॥ ॐ य वि द्वा न् य न मः ॥ त क ॐ ॥ ॐ लाः रु म्म न् य न मः ॥ ॐ नू य रु  
म्मा य न मः ॥ ॐ वा म्म न् य न मः ॥ ॐ वं य रु म्मा य न मः ॥ ॐ नू ज म्म न् य न मः ॥ ॐ नू य

[illegible]



ॐ ह्यननय पूज्या जैल्लिंदयात ॥ नवंदीर्घवी जाक नेवपी गिचिरुमगुलयुजा ॥  
तनावागमगुलयुव ॥ उरुवज्जिकायेनमः ॥ तनास्यानवाष्टदलकमलदलवेष ॥ त  
दरिमूरुदलायं विधायदकिं नावलनाष्टदलदवीचयुजयता ॥ तगु उरिहीमा  
येनमः ॥ उंयडेययनमः ॥ उंयिका वदंष्टयेनमः ॥ उंयैकलदेनलमूरुवायेनमः ॥  
उंहीवायुवगायेनमः ॥ उंयुप्रवभुयेनमः ॥ उंयुवडाष्टनमः ॥ उंयंस्कुलनासायेन  
नमः ॥ तनादकिंला ॥ उंरुःवज्जवानाष्टनमः ॥ अगोयिनथेवा ॥ उंरुंकंकोत्यनमः ॥  
उंनकात्तनायुनमः ॥ उंविषकूपितवदनायेनमः ॥ उंनूकालदंष्ट्रायेनमः ॥ उंरुक  
नात्यनमः ॥ उंनूकाल्यनमः ॥ उंनूधायायेनमः ॥ उंनंविनूपायेनमः ॥ तनावाभा

उँ हं वज्र नीश्वर नमः ॥ पूष्वव नमः ॥ उँ हं लोभेय नमः ॥ उँ वं गंगय नमः ॥ उँ विन्दु ल्याय नमः ॥  
 उँ हं सूय नमः ॥ हं विनाय नमः ॥ उँ हं गंग लाय नमः ॥ उँ वं लक्ष्मय नमः ॥ उँ हं यिगं  
 य नमः ॥ उँ वं हं ह्यय नमः ॥ ततः यश्चि मः ॥ उँ हं वज्र लोभेय नमः ॥ पूष्वव नमः ॥ उँ हं  
 वज्र लाय नमः ॥ उँ लवक गंगाय नमः ॥ उँ लि वन कनक वल्लभ नमः ॥ उँ लु डे वल्लभ नमः ॥  
 उँ हं विपल स्वाय नमः ॥ उँ लु नमः ॥ उँ सु ता नाय नमः ॥ ततः वायु व्या ॥  
 उँ कवज वल्लभ नमः ॥ उँ लु श्रु हलाय नमः ॥ पूष्वव नमः ॥ उँ कृ सा विभू नमः ॥ उँ लाय नमः ॥  
 उँ लाय नमः ॥ उँ ली जल वल्लभ नमः ॥ उँ लु वृद्ध नमः ॥ उँ कृ वां गीष्वाय नमः ॥ उँ लु गमय  
 नमः ॥ उँ लु विद्युत् नमः ॥ उँ लः स्मृत्य नमः ॥ ततः ॥ १ ॥ नमः ॥ उँ कं वज्र लक्ष्म्य नमः ॥



गधमवाङ्कृष्णीयतायेनमः॥ उवावदुलखायेनमः॥ उंवीनमधनवदनायेनमः॥  
उंयुहंसवल्हयेनमः॥ उंरूधयेनमः॥ उंयूपमभयेनमः॥ उंयुगाननयायेनमः॥ उं  
वःविमलगमधनायेनमः॥ तनानेय ॥ उंक्रःवजकोमायेनमः॥ तथा॥ उंक्रुयदायेन  
मः॥ उंवाश्रुनभयेनमः॥ उंवीकृमायेनमः॥ उंनृमृगयतिगमनायेनमः॥ उंक्रुनलमा  
लायेनमः॥ उंनृसूतनायेनमः॥ उंनृकीनायेनमः॥ उंनःरदायेनमः॥ एता॥ एता॥ उंक्र  
वजवसूयनमः॥ तथा॥ उंक्रिधियेनमः॥ उंयामायायेनमः॥ उंयुकीलीयेनमः॥ उंयु  
लभयेनमः॥ उंकीसूयनमः॥ विजयायेनमः॥ उंयुधीजयायेनमः॥ उंयुधीजयलीयेनमः॥  
उंयःधीयसूतनमः॥ अथवापधनदवीमृजयित्वा॥ उंरिययीयुदीयुयुयंरीमाय

अथदवीयानमः॥ अथननय्याजलिन्दयात्॥ एवंसर्वज्ञतादक्रितज्ञानवासवदि  
कायांयकिंकुमरा॥ उंक्रःमात्रलकृयेनमः॥ उंखःमेथूनकृयेनमः॥ उंगःगनुयनः  
कृयेनमः॥ उंघःसकायकृयेनमः॥ उंढःसर्वमिकादनकृयेनमः॥ तथापूर्वज्ञानस्य  
सथा॥ उंवःविद्वषकृयेनमः॥ उंरुःअंशुककृयेनमः॥ उंजःउवाटनकृयेनमः॥  
उंमःस्यलकृयेनमः॥ उंरुःउत्सुखरुतकृयेनमः॥ तथादक्रितज्ञानसथा॥ उंढः  
स्नानकृयेनमः॥ उं०ःअरुतकृयेनमः॥ उंउःअजतकृयेनमः॥ उंरुःआरुषीकृ  
येनमः॥ उंघःसयमकृयेनमः॥ तथावामज्ञानसथा॥ उंघःशोधिककृयेनमः॥ उंरुःस  
वल्हकृयेनमः॥ उंवःमृदुववतकृयेनमः॥ उंरुःवन्धनकृयेनमः॥ उंमःदानकाकाः



ASHA ARCHIVES 3621

କାମ ଦେବ ଧର୍ମାବିଦି

୧୩



ASHA ARCHIVES

3621

दीन दत्त पुस्तकालय



[illegible][illegible]







श्रीवज्राय नमः॥ ॐ कृ कृ वज्राय नमः॥ ॐ कृ कृ वज्राय नमः॥ ॐ कृ कृ वज्राय नमः॥ १ ॥  
 गतावायवा॥ ॐ नः वज्रवक्त्राय नमः॥ तथा गतवर्गिताकावादीतादीधन॥ ८ ॥ गतः  
 वृक्षाय नमः॥ ॐ मः वज्रगणाय नमः॥ तथा वज्रवर्गिता॥ २ ॥ गतानेयय॥ ॐ नः वज्रका  
 रिकयाय नमः॥ तथा गतवर्गिता॥ १० ॥ गताय नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ तथा गतव  
 र्गिता॥ ११ ॥ गतादकिनचाववाय॥ ॐ नः वज्रयमाय नमः॥ अस्यास्तं॥ ॐ गृयज्यामि  
 नमः॥ गतागुगथेवकवर्गिताकावादितादीधन॥ १२ ॥ अथवा द्वादशयस्य ककम  
 लं॥ ॐ कानमादीदहामस्य॥ अकवीजानि॥ अकअस्यविगतिवज्रमिथियानमः॥ ॐ गि  
 म्या॥ ॐ लिदया॥ गतः ॐ नः संपूर्ण॥ ॐ नः वज्रवर्गिताय नमः॥ अस्यास्तं॥ ॐ नः

अग्निनीलाय नमः॥ गतः पूर्वज्ञाय नमः॥ ॐ यंतीलदंजय नमः॥ ॐ लामात्रीय नमः॥  
 १ ॥ गतादकिनचाववाय॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ २ ॥ उरु नः॥ ॐ नः वज्र  
 लाय नमः॥ ॐ नः वज्रवर्गिताय नमः॥ ३ ॥ यथिम॥ ॐ लंमहाववाय नमः॥ ॐ यावजगृख  
 लाय नमः॥ गताधः संपूर्ण॥ ॐ नः संपूर्णवाजाय नमः॥ ॐ नः वज्रवर्गिताय नमः॥ ४ ॥  
 गतः ॐ नः संपूर्णवाजाय नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ गतः पूर्वदिवा लतावधवाय नमः॥ ॐ नः  
 ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ ॐ नः वज्रवर्गिताय नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ गतः  
 यामालसंपूर्णवाजाय नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ गतः यथिमवाजाय नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥  
 ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥ ॐ नः वज्रवायवे नमः॥







ॐ साईकाठात्रिभुवदवतागहस्थानमः॥ वाक् दवताय नमः॥ ॐ वज्रवृद्धी  
प्रायनस नमः॥ ॐ वज्रमकीलाय नमः॥ ॐ वज्रमुक्ताय नमः॥ ॐ वज्रवृद्धस्य  
नमः॥ ॐ वज्रनीधनाय नमः॥ ॐ वज्रकतवनमः॥ ॐ वज्रारुवनमः॥ ॐ वज्रलोकाग्रय  
नमः॥ ॐ वज्रपूवाय नमः॥ ॐ वज्रागरुहाय नमः॥ ॐ सर्ववेजनक्रियाय नमः॥ ॐ वज्रदादननाभि  
स्थानमः॥ ॐ वज्रपाउषकलायाः॥ ॐ वजनन्दिकम्बनाय नमः॥ ॐ वज्रमहाकालाय नमः॥  
ॐ वज्रवृद्धीय नमः॥ ॐ वज्रहस्तिननमः॥ ॐ सर्ववज्रकृत्याय नमः॥ ॐ  
सर्ववज्रद्वीस्थानमः॥ ॐ दात्रिये नमः॥ ॐ सर्वसिद्धिस्थानमः॥ ॐ गुणवृद्धवा  
चिसंस्थानमः॥ कतः॥ श्रीदेवाय नमः॥ रुद्रात्मने नमः॥ वज्राय नमः॥ नारायणे नमः॥ नमो व

[illegible]



यमनेऽथ वमृदावायुवृक्षगम नवका विस्तु विनायक कालिक यनदिक मृदव मदाका  
तसमंदास नरु। धादुह न नु ननु ससु न नलदाय १७ ॥ यस्यानं नादि मधुं स्ति मि मेल  
धरुवं गद्य गश्च वस्यस्य (गान्धर्वं ना विरु यरु गित यूनमा वधमाका नकला। वीरं न वाकका  
लन सक नरु व नदु ४४ सोखा स्व ला वं निर्वीनं निनिमित्तं वा यगन क नर्धं निगु धक नमस्य  
॥ कालं वि द्यादि वजं यून ख मनु यमं सर्वं निस्थि य र्धं कूट र्धं कर्तु नासा मूख नयन मि न ४ स  
वत ४ या दित्यादं। रुगा कं रुग नाथं यि रुव नवल धृ क का नर्धं का नर्ध नां विद्या र्धं याग ग  
संयन मसूख यदं काल वरुं नमस्य ॥ सु स्या वं ग कि नू यं ग उद मल निरुं द्यादेशादि सग मं रु  
नं वं जाव ला संयन यद ग मर्धं न मि न क न मा मि ॥ सु कं गु ला क नाथं सु व नि म ग ध ना र्धं स्ति

गं लाक मूर्द्धि वायु खं मूल्क नागं रुव यम र्धं नं विरु यून न मा मि ॥ वि नार्धं मनु नू यं  
विद गाय विरु गं दु ४४ सोखा स्व ला वं साधु नां गं नू यं स्वेक नम नूरु वं दा नू र्धं दा नू र्धं  
नां। याय क म्मा व कू यो स्वे म न मि विरु न न ल न ग स्य जा नं लाक ग विरु यून यं विरु व  
न न न नं व ज स लं न मा मि ॥ न का न का वि र क ४ स म विरु म स म ४ स या व मा गु र्धं रु  
का क्क (अ व स म का सि न द वि ना म दा वि र व र्ध नू य ४ क स्व दी र्ध यै ४ यून अ गु र्धं रु ति  
स गु र्धं म्मि न न धा न व र्ध य ४ स द्या धा न न क ४ गु र्ध ग व न र ग स न म र्ध न म र्ध ॥ न म ४ य  
काल व का य य न ता क नू र्ध ॥ ल न। विरु वा ल्य लि क या र्ध व र्ध न रु न क मू र्ध य ॥  
४४ य रि न य र्ध न म स्का न (गु र्ध ४ य र्ध ४ र्ध नि र्ध ला र्ध क य र्ध मि य र्धि की व र्ध नी  
यो न ॥ न न ४ डं व ज य र्ध न ४ र्ध स्वा दा ॥ डं व ज य र्ध न ४ र्ध स्वा दा ॥ डं व ज दी य र्ध ४



हं स्वाहा॥ ॐ वज्रगव्या ॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ वज्रमात्रा ॥ ॐ स्वाहा॥ ॐ वज्रनेत्राय  
ॐ स्वाहा॥ ॐ स्वादि मयुष्यदे ॐ स्वादि कि वगदि मिहदमन्यादि हि यज्ञा कृया न ॥  
मन ४ यूनन यियाय दशनादिकं कृया न ॥ समन्वाह ननु मां ह ग व न श्रीका लवज  
यस्य की कृत सकल काल गम रा वव कु सम गु ल गम द वना चर्क य न म द ज न नि  
उन्मा क न वा जान मा इ जान मा धि क न का वि ना न मा दि न म युर म रि न स्त द रि म र्वः  
य नि द ग या मि । न द ह मि न युर नि क दा व ना यि न के त्रि य वि वि य ना द ग दि न न स ग न  
स ग स ग न ग नि स ग न गि य य स क जि न ता म उ न क न स क न म (अ) म नू मा द नू स क  
मा स य स स म स य क वि क यां य कि य मू की म ध र्म च र्क य व र्क ना या य व रि न ध र्म  
व कान स र्व वृ क्षा न य य मि य वि नि द्वा म न ग न द य ना य ना न वि क न क न धी या न

मृष्यदि हीन विन य न जान ना कान न मा य द न ध य नि व स थ स क न काल म ना कू ल मि  
नि स क ल जि ना न या व ग स क ल धु रा नू ता व ना न क क ल य ना क ल द्वा न कि न शु न्ना ना  
क नू ना रि त्र स म ल य नू य म म दा स ख ला रि त्र व नु ग ग दि नि वृ य य त्रि द्वा म या मि आ  
मा ना क य य दा दि स क न जि न स न ज न स मू ह य य न स क नू धा य न व र्क य स म स्ता य ल्का न  
य नि व र्क यो नि र्था न या मि । स र्व स ल्का ना क र्म स म्वा य वा धि । व र्क मू ल्या द या मि । व  
जं य ध्मा व जं य ध्म के मू दां गु नू म यि मि न सा ध न या मि । स व र्ज । दान दा स्मा मि व र्क जि न  
व न स म र्थ आ न या म्प न व क । य जं र व र्क क वा मि स कू ट ज ल ज कू ल सं व न या न या मि स ल्का  
नां मा कू ह ना जि न ज न क कू ल वा धि मू ल्या द या मि ॥ कू न व नू के वि य नि कू र्व नि जि न स



नवशुद्धविलेकप्रियादं निर्णयस्तु कित रुथा॥ निर्ममानि नर्दकाया यथावज्जघन  
दयशमथे वादं मनासका विदप्रियामि सर्वे न॥ दार्तगालं कता वीर्य धार्तपल्लवैरका  
गली। पतिधार्त वलं हननमताया नमिता दश॥ पुनामाना विरिची जे निर्णयं यत्रियुजिताश  
मथादं पुनयि व्यामि सदानं कीनमानसाश॥ सर्वसत्त्वधूममेजा क नूय मूदितामथा। उयका  
लाक धर्मीनी सर्वदा मुममागय॥ दान के मधुना लाया अह अवे यो ममर्थगा। नित्यममत्य  
नशयीत्या लवयं वाधयधे नृधाम॥ प्राणिनां हि सेनसु यं काममिथ्या। चित्रिना। मृगालाघ  
घयान् मृगेषु नृपि नृरावर्ध॥ अरि ध्यादाद विना व कू दृष्टि नयिद्वेन॥ आध्यामिक  
धाने व किं पुनः कन (हमनि॥ को कृत्यस्या नमिध्यामि। उी ह्ये मथसंगय॥ नागद्वय

महाभाद मान कृपास्व जामिव॥ स्यात्क कामरुवा विद्या दृष्ट्या सव विवर्जित॥ पुन्यदना  
नावायान रिक्ता नरावका॥ निर्वि (हमस्मि लवनाथ वलकमदर्थ यत्रा गुनाथ न (ह  
रुकि निर्हं नो लवनां मम॥ सदाय नमु दृष्टि त्याद गयि व्यामि पुन्यनी संवल्या नूय नमु  
न पुन्यं संरा नमाद वा न॥ सर्वो यदि नू या व न ॥ कायविलेका थारु नाश। नया प्रवम ल (मि  
॥ सखयामा द्रसा गाना न॥ दवा व र्धे काले न गस्या सम्या रि नमु वा स्त्री गार वतु  
लोके य वा नार वतु धमि क॥ किम्या यन दस वर्य ॥ यधं य धं ह लं ममा। गनी न  
वद दा मय सर्वयो वाधिद नव॥ यत्कि विरु गता दू ॥ न सर्व मयि यवा गी। वाः  
धिसत्त्वगुरु ॥ सर्वे जगत्सखिन मनु वा मूय कायायिकं दू ॥ र्व विना दूक्त नन्यः।



या। दिव्यनेक नकायन। उगाद्वह लमायुयान ॥ नमः ॐ वज्रसत्त्वसमयमनुयाल  
 यवजसत्त्वनायतिष्ठ दृढमस्तव सुभाषामस्तव सुभाषामस्तव जनु प्रका मस्तव  
 सर्वसिद्धिमेवयच्छ सर्वकर्मसर्वमेवितर्क (अयंकुतुहं हृदहृदहृदो १ रुगावसर्वम  
 धागन वज्रमामस्तव वज्रीरु वमदासमयसत्त्वमा ॥ १॥ नमः निधामा नमः नमः  
 जायत्रियुनष्टायय ॥ १॥ नमः १ रुगाव १ सर्वमस्तवत्वात्थत्यादियठि ला म १ कात  
 नयनविमर्जनकाले नमः दं विमर्जयत ॥ नमः ॥ कायवाक्चित्तयुगादि १ युजयित्  
 जगदुनी। साधकावन्दनकर्ममात्मानं प्रणि विमर्जयदिनि ॥ यन्मनाननमवेष्टा १  
 सर्वमस्तवस्तुम। स्वस्मानमगताजानु यावदवायनदिन ॥ वायावदयनासंयम

प्रिसंधायजनंयति १ अनुवज्रं मात्मानं रुलीसाद्विविचि यत ॥ आह्वानं वाम  
 मातुर्नु नागच्छ नमः गृहंयुनयति ॥ विमर्जययाविधिंनरु यदलमि गुरुं मया ॥ न  
 नामुसकलालाक १ सर्वहृत्कानराजन ॥ १॥ नमः गवत १ श्रीकालचक्रयुजाविधि १  
 साय १ ॥ ॥















